INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 5.828 (SJIF 2022)

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

(Study of attitude towards Internet and Social networking sites of Students studying at undergraduate level)

डॉ. सरोज बाला
एसोसियट प्रोफ़ेसर,
अध्यापक शिक्षा विभाग,
डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)
E-mail: drsaroj21@gmail.com

दीपा अग्रवाल
एम. एड. छात्रा,
अध्यापक शिक्षा विभाग,
डी. एस. कॉलेज, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)
E-mail: deepaagrawal039@gmail.com

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/07.2022-21219542/IRJHIS2207004

सारांश :

इस अध्ययन का उद्देश्य महाविद्यालय के विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ ज़िले के अनुदानित महाविद्यालयों के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र और 50 छात्राएँ) पर किया गया है। आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकी विधि द्वारा किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि छात्र-छात्राओं की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है तथा छात्राओं की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति छात्रों की तुलना में कम सकारात्मक है। जब यह अध्ययन ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के संदर्भ में किया गया तो पाया गया कि ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में अंतर है और शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है।

मुख्य शब्द : *इंटरनेट, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, अभिवृत्ति, स्नातक स्तर*

प्रस्तावना :

वर्तमान समय इंटरनेट का युग है जो 1990 के दशक में विकसित हुआ था। इंटरनेट सबसे उन्नत और लोकप्रिय प्रौद्योगिकी है। 21वीं सदी में जहाँ पूरी दुनिया डिजिटल हो गई है, भारत में भी प्रौद्योगिकी के उपयोग में भारी वृद्धि हुई है। इंटरनेट की सहायता से किसी भी तरह की जानकारी सर्च इंजन द्वारा मिनटों में मिल जाती है। इसके माध्यम से टिकट बुकिंग, बैंकिंग, पढ़ाई, शॉपिंग और नौकरी आदि सुविधाएँ ऑनलाइन प्राप्त कर सकते हैं।

सोशल मीडिया इंटरनेट के एक अभिन्न अंग के रूप में उभरा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स व्यक्तियों को सामाजिक संबंध बनाने के लिए वेब आधारित एप्लीकेशन प्लैटफ़ॉर्म प्रदान करती है। इसके माध्यम से लोगों को स्वयं

को अभिव्यक्त करने का अवसर मिला है तथा संचार माध्यम लोकतांत्रिक बन गया है। कुछ प्रमुख सोशल नेटवर्किंग साइट्स जैसे फ़ेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम आदि हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह विद्यार्थियों के ज्ञान को बढ़ाने तथा शैक्षिक सूचनाओं को एकत्रित करने में सहायक है। इंटरनेट के माध्यम से शोधार्थी किसी भी विषय पर अपना शोध कार्य आसानी से कर सकते हैं। यह शोधार्थी को पूर्व में किए गए शोधों की जानकारी प्रदान कर शोध विषय का चयन करने में सहायता करता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी विषय पर प्रभावी समूह चर्चा की जा सकती है। फ़ेसबुक हो या इंस्टाग्राम हर जगह किसी ख़ास विषय या परीक्षा से जुड़े ग्रुप्स या कम्युनिटी मौजूद होते हैं जिनमें लोग उस विषय या परीक्षा से जुड़ी हर महत्वपूर्ण तथा अद्यतन जानकारी साझा करते रहते हैं। आज शिक्षक तथा छात्र इन कम्युनिटी तथा ग्रुप का हिस्सा बनकर स्वयं को इन जानकारियों से अपडेट रखते हैं। कोरोना काल में जहाँ सभी स्कूल, कॉलेज, कोचिंग सेंटर आदि बंद हो जाने से बच्चों को पढ़ाई में रुकावट का सामना करना पड़ा तो वहाँ इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्ध कराना संभव हो पाया।

इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जहाँ अनेक लाभ है वहीं इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिल सकते हैं। इसके उपयोग का सबसे बड़ा नुक़सान यह है कि लोगों को इसकी आदत सी हो जाती है और इससे उनका बहुत समय बर्बाद होता है। इसके प्रयोग से व्यक्ति की व्यक्तिगत जानकारी लीक होने का ख़तरा बढ़ जाता है। इंटरनेट का सबसे बड़ा नुक़सान पॉर्नोग्राफी साइट्स में है। इस तरह की साइट्स पर ढेरों अश्लील फ़ोटो और वीडियो रहते हैं। इन को देखकर बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। साइबर अपराध सोशल नेटवर्किंग साइट से जुड़ी सबसे बड़ी समस्या है। इसके अत्याधिक प्रयोग से लत लगने के दुष्परिणाम भी सामने आए हैं। घंटों तक इन सोशल साइट्स पर समय बिताने से विद्यार्थियों की पढ़ाई पर तथा उनके कुछ नया करने की रचनात्मकता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इसके कारण व्यक्ति की कार्य क्षमता पर भी विपरीत असर पड़ता है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रयोग से लोग वास्तविक जीवन से कट जाते हैं और आभासी दुनिया में जीने लगते हैं तथा कभी-कभी इस आभासी दुनिया को वास्तविक भी समझने लगते हैं।

दुनिया भर में इंटरनेट के 4.66 बिलियन उपयोगकर्ता हैं। आंकड़ों के अनुसार, भारत में 0.7 बिलियन लोग इंटरनेट का उपयोग करते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया भर में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के 4.14 बिलियन उपयोगकर्ताओं में से 4.08 बिलियन उपयोगकर्ता मोबाइल पर इन साइट्स का उपयोग करते हैं। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोगकर्ताओं की संख्या 0.38 बिलियन है। इंटरनेट एंड मोबाइल एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया के अनुसार सोशल नेटवर्किंग साइट्स की लोकप्रियता कॉलेज जाने वाले विद्यार्थियों में सर्वाधिक है तथा वे इंटरनेट का उपयोग भी अधिक करते हैं। इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के कई लाभ है तो कई हानियाँ भी हैं। यदि युवा तथा विद्यार्थी इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट का उपयोग सकारात्मक रूप से करें तो यह युवाओं के लिए वरदान साबित हो सकती है लेकिन यदि इसका उपयोग ग़लत रूप से किया जाए तो उसके भयंकर परिणाम हो

सकते हैं।

सम्बंधित शोध साहित्य की समीक्षा :

एस. सरकार एवं पी. दास (2015) ने "इम्पैक्ट ऑफ़ इंटरनेट एंड सोशल वेबसाइट ऑन कॉलेज स्टूडेंट्स" विषय पर शोध कार्य किया है। यह अध्ययन पश्चिम त्रिपुरा में 280 कॉलेज के विद्यार्थियों (140 छात्र और 140 छात्राओं) के नमूने के साथ आयोजित किया गया। अध्ययन में पाया गया कि छात्र तथा छात्राओं पर इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों का प्रभाव महत्वपूर्ण था। अधिकांश छात्र शैक्षिक उद्देश्य के लिए इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग वेबसाइटों का उपयोग करते हैं।

प्रदीप कुमार वर्मा तथा मनोज कुमार (2017) ने "सोशल साइट्स का विद्यार्थियों के बहुमुखी व्यक्तित्व पर पढ़ने वाले प्रभाव" का अध्ययन किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि सोशल साइट्स का छात्रों की अपेक्षा छात्राओं के धार्मिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक तथा भावनात्मक मूल्यों पर अधिक प्रभाव पड़ता है। इस अध्ययन में यह भी पता चला की छात्राओं की अपेक्षा के छात्रों के पीयर ग्रुप, सामाजिक तथा आर्थिक मूल्यों पर सोशल साइट्स का प्रभाव अधिक पड़ता है। उपरोक्त सकारात्मक प्रभाव प्राप्त करते हुए शोधकर्ता इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि यह सकारात्मक प्रभाव तभी प्राप्त होंगे जब हम इन सोशल साइट्स का विवेकपूर्ण उचित सदुपयोग करेंगे अन्यथा इसके दुष्परिणाम भी विद्यार्थियों एवं देश के भविष्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं।

लीला मुरलीधन एवं अन्य (2018) ने "ए स्टडी ऑन द इंटरनेट यूज़ बाई स्टूडेंट्स एंड देयर एकेडमिक अचीवमेंट्स इन द प्रेजेंट एजुकेशन सिस्टम" के विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। शोध में विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन और इंटरनेट उपयोग के बीच के संबंध का अध्ययन किया गया। अध्ययन ने विद्यार्थियों द्वारा (6 घंटे तक) भारी इंटरनेट उपयोग का संकेत दिया जो उनके कम शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ सहसंबंध रखता है।

संजू दास एवं प्रियंका सिकदर (2018) ने "एटीट्यूड ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेंट्स टुवर्ड्स सोशल मीडिया" विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन में विश्वविद्यालय के छात्र तथा छात्राओं की सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति में अंतर पाया गया। लड़कों की सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति लड़कियों की तुलना में अधिक पाई गई। साथ ही अध्ययन से यह भी पता चला की ग्रामीण छात्र तथा ग्रामीण छात्राओं की सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकला कि शहरी छात्र तथा शहरी छात्राओं के सोशल मीडिया के प्रति अभिवृत्ति समान है।

अर्जुन कुमार गोटेवाल (2018) ने "सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन" विषय पर पी-एच०डी० स्तरीय शोध कार्य किया। यह अध्ययन भोपाल ज़िले के 25 महाविद्यालयों के कुल 500 विद्यार्थियों के नमूनों के साथ आयोजित किया गया था। अध्ययन में पाया गया कि सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करने वाले अधिकांश विद्यार्थियों की इन साइट्स के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक है।

सोनल शर्मा (2020) ने "रिलेशनशिप ऑफ़ द इंटरनेट एंड सोशल नेटवर्किंग साइट्स विद द एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ़ स्कूल स्टूडेंट्स" विषय पर शोध कार्य किया। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ ज़िले के उच्च

माध्यमिक विद्यालय के 283 विद्यार्थियों के एक नमूने पर आयोजित किया गया था। इस अध्ययन के परिणाम से पता चला कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ इंटरनेट का एक महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध है और सामाजिक नेटवर्किंग साइटों का विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धि के साथ नकारात्मक सहसंबंध है।

समस्या कथन :

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. छात्र-छात्राओं की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. छात्र-छात्राओं की सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. छात्र-छात्राओं की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं :

1. छात्र-छात्राओं की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. छात्र-छात्राओं के सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. छात्र-छात्राओं के इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों के सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
6. ग्रामीण तथा शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

अध्ययन का सीमांकन :

- प्रस्तुत अध्ययन अलीगढ़ ज़िले के अनुदानित महाविद्यालयों श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय तथा धर्म समाज महाविद्यालय के केवल स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।
- इस अध्ययन में केवल विज्ञान-वर्ग के 100 विद्यार्थियों (50 छात्र तथा 50 छात्राओं) को शामिल किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन 50 ग्रामीण तथा 50 शहरी विद्यार्थियों तक ही सीमित रखा गया है।

शोध का अभिकल्प-

शोध विधि :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य किसी इकाई की वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना तथा भावी सुधार के लिए सुझाव प्रस्तुत करना होता है।

अध्ययन में प्रयुक्त जनसंख्या :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अलीगढ़ ज़िले के महाविद्यालयों में अध्ययनरत बी.एससी. स्तर के विद्यार्थी सम्मिलित किए गए हैं।

अध्ययन का न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने न्यादर्श के चयन हेतु यादृच्छिकी न्यादर्श की लॉटरी विधि का प्रयोग किया।

शोध के उपकरण :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में डॉक्टर सुभाष सरकार तथा प्रसेनजित दास द्वारा निर्मित "इंटरनेट एंड सोशल नेटवर्किंग साइट्स एटीट्यूड स्केल" (इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति दृष्टिकोण पैमाने) का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के चर-

1. *स्वतंत्र चर-* इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स स्वतंत्र चर है।
2. *आश्रित चर-* अभिवृत्ति आश्रित चर है।
3. *नियंत्रित चर-* स्नातक स्तर के विद्यार्थी नियंत्रित चर हैं।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है-

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी-परीक्षण
4. सार्थकता स्तर

आंकड़ों का विश्लेषण तथा व्याख्या :

परिकल्पना - 1: छात्र -छात्राओं की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या- 1.1

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता स्तर
1.	छात्र	50	79.42	10.72	98	1.90	0.5 स्तर पर स्वीकृत
2.	छात्रा	50	83.38	10.11			

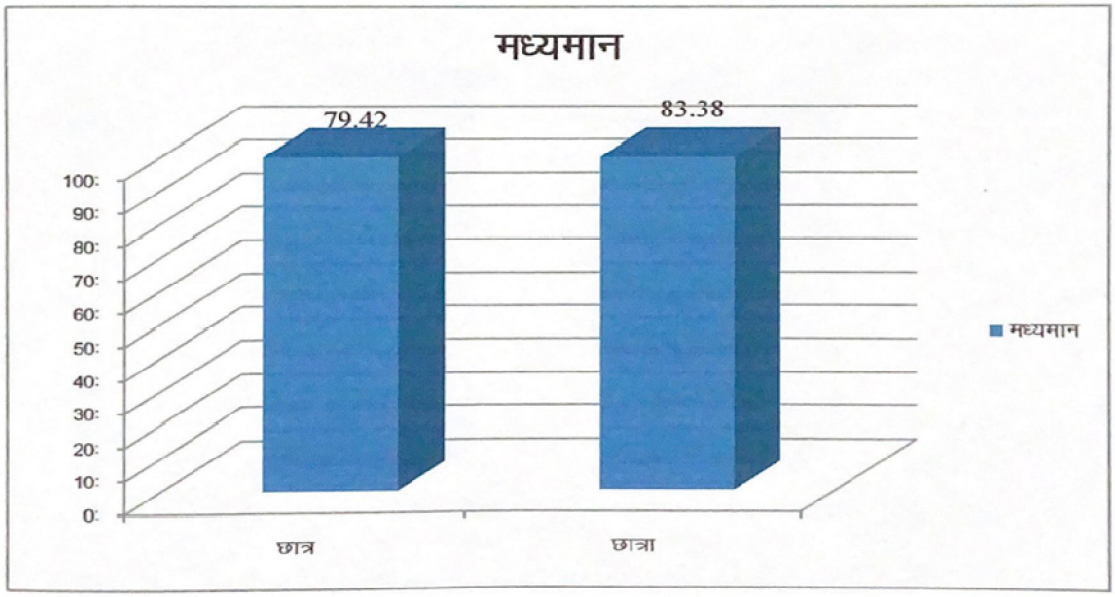

ग्राफ़ संख्या- 1.1

सारणी संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में छात्रों का मध्यमान 79.42 तथा मानक विचलन 10.72 हैं और छात्राओं का मध्यमान 83.38 एवं मानक विचलन 10.11 है। दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 1.90 आया। यह मान डी०एफ० = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से कम है अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 2: छात्र -छात्राओं के सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या- 1.2

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1.	छात्र	50	76.32	12.41	98	2.66	0.05 तथा 0.01 स्तर पर अस्वीकृत।
2.	छात्रा	50	69.78	12.22			

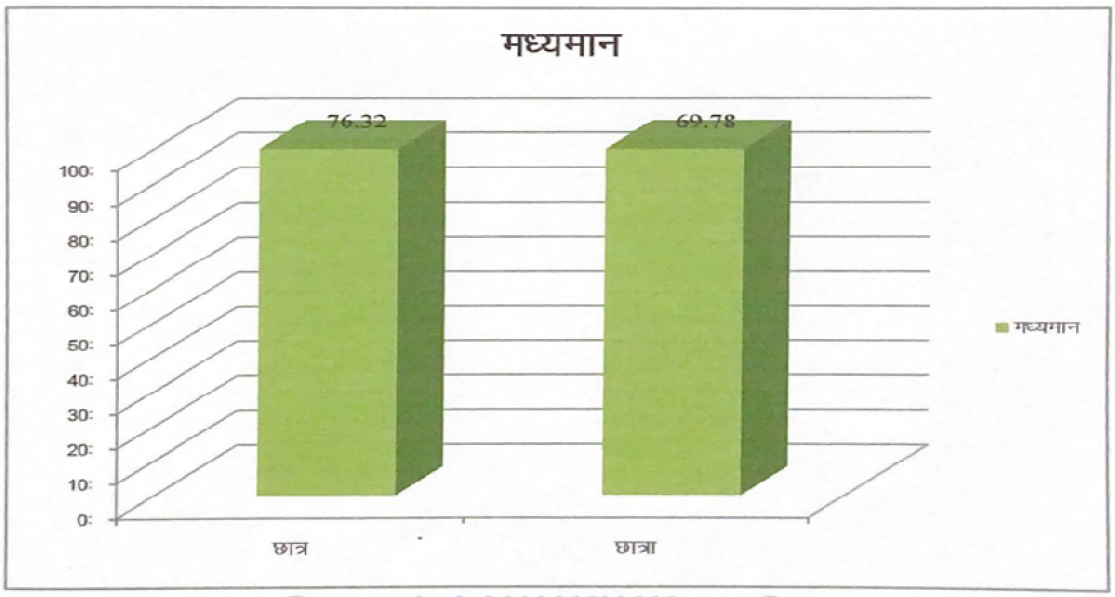

ग्राफ़ संख्या- 1.2

अपनी सारणी संख्या 1.2 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में छात्रों का मध्यमान 76.32 तथा मानक विचलन 12.41 है और छात्राओं का मध्यमान 69.78 एवं मानक विचलन 12.22 है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 2.66 आया। यह मान डी०एफ० = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से अधिक है अर्थात् दोनों समूहों में सार्थक अंतर है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 तथा 0.01 दोनों स्तरों पर अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 3: छात्र छात्राओं की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या- 1.3

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1.	छात्र	50	155.74	12.11	98	1.10	0.05 स्तर पर स्वीकृत।
2.	छात्रा	50	153.16	11.29			

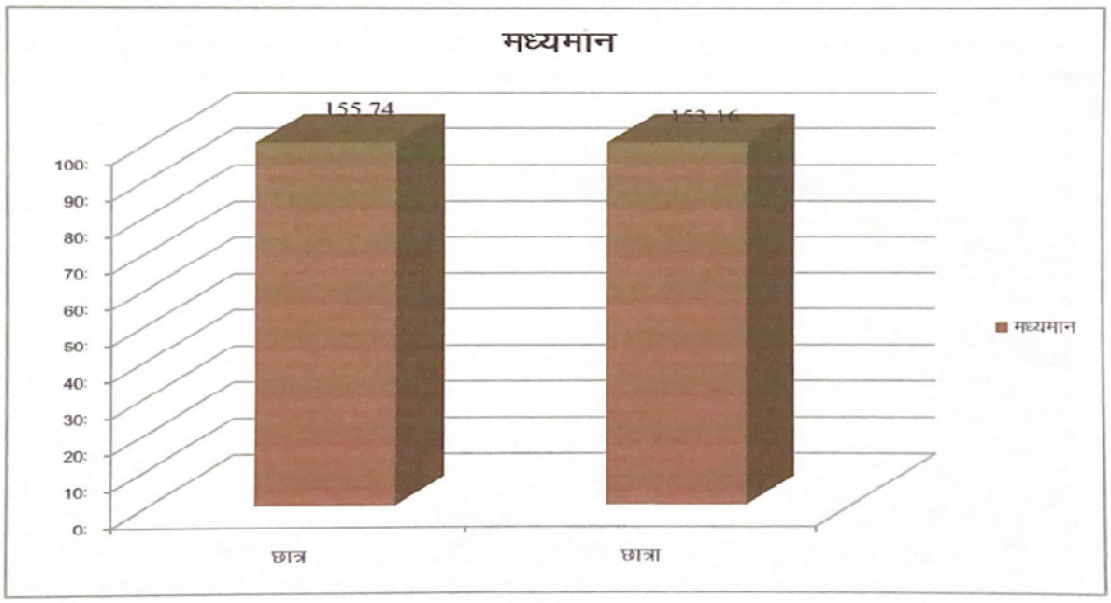

ग्राफ़ संख्या -1.3

सारणी संख्या 1.3 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में छात्रों का मध्यमान 155.74 तथा मानक विचलन 12.11 है और छात्राओं का मध्यमान 153.16 एवं मानक विचलन 11.29 है। दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 1.10 आया। यह मान डी०एफ० = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से कम है अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 4: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1.4

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1.	ग्रामीण विद्यार्थी	50	81.1	8.94	98	0.30	0.05 स्तर पर स्वीकृत
2.	शहरी विद्यार्थी	50	81.7	10.72			

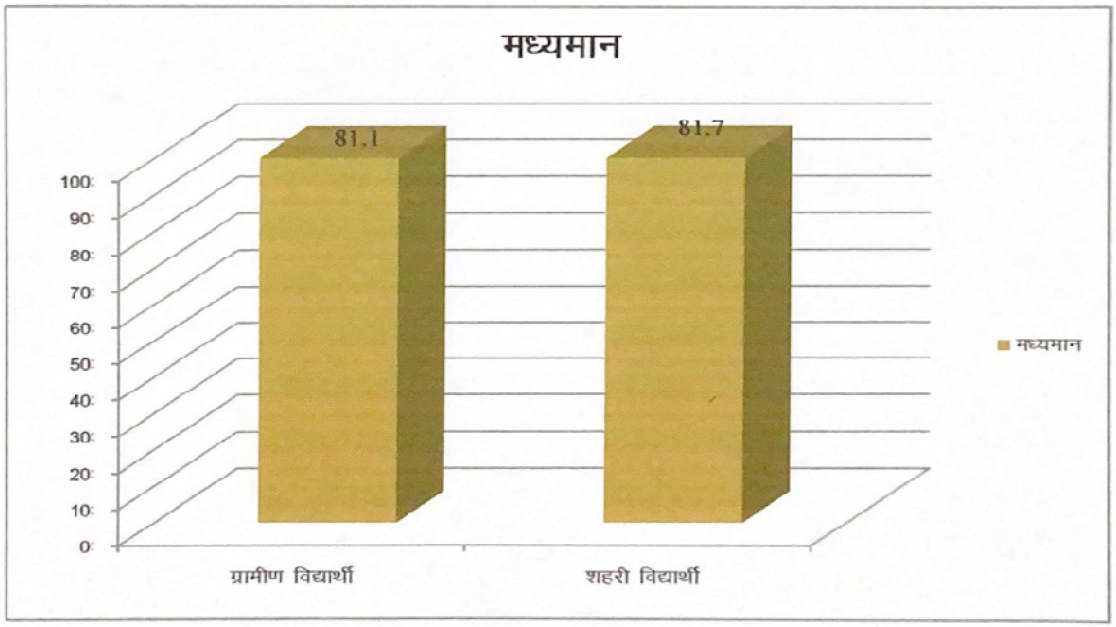

ग्राफ़ संख्या 1.4

सारणी संख्या 1.4 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 81.1 तथा मानक विचलन 8.94 है और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 81.7 एवं मानक विचलन 10.72 है। दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 0.30 आया। यह मान = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से कम है अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 5: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1.5

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1.	ग्रामीण विद्यार्थी	50	73.04	10.59	98	0.26	0.05 स्तर पर स्वीकृत
2.	शहरी विद्यार्थी	50	72.44	12.63			

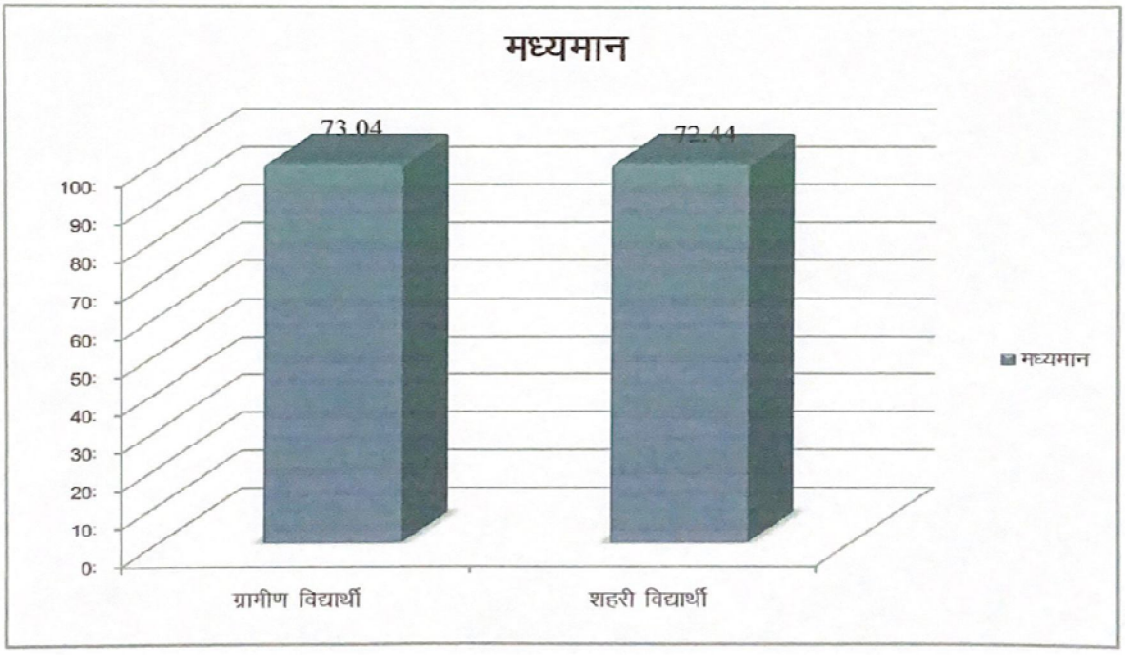

ग्राफ़ संख्या 1.5

सारणी संख्या 1.5 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 73.04 तथा मानक विचलन 10.59 है और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 72.44 एवं मानक विचलन 12.63 है। दोनों समूह के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 0.26 आया। यह मान डी०एफ० = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से कम है। अथात दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना - 6: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

सारणी संख्या 1.6

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	डी0एफ0	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1.	ग्रामीण विद्यार्थी	50	154.76	10.09	98	0.31	0.05 स्तर पर स्वीकृत
2.	शहरी विद्यार्थी	50	154.14	9.88			

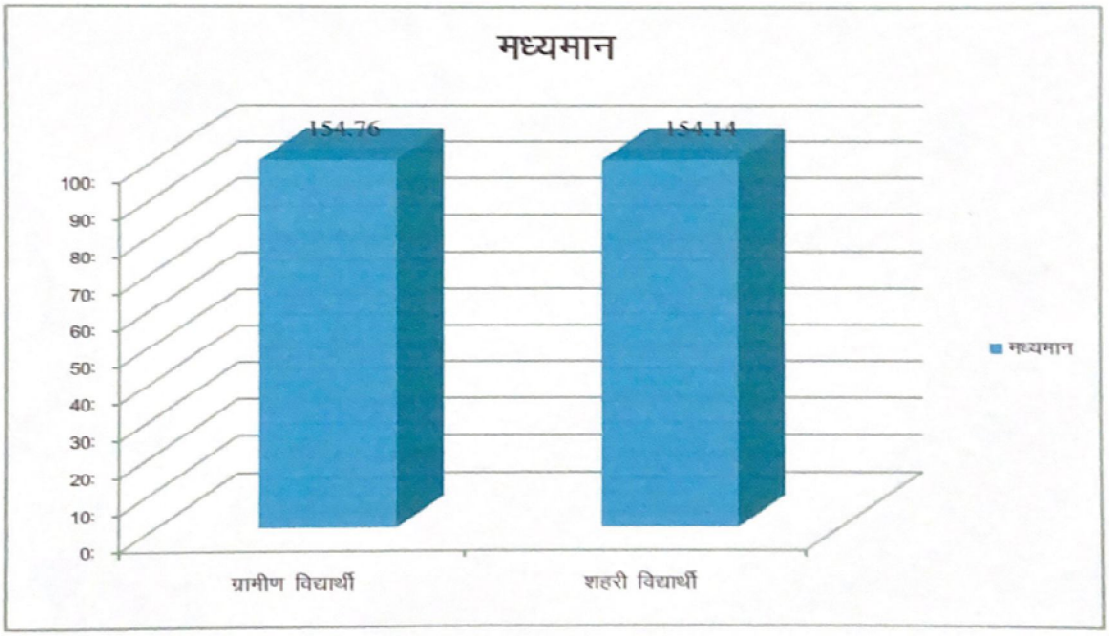

ग्राफ़ संख्या 1.6

सारणी संख्या 1.6 से स्पष्ट है कि उपर्युक्त परिकल्पना के संदर्भ में ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान 154.76 तथा मानक विचलन 10.09 है और शहरी विद्यार्थियों का मध्यमान 154.14 एवं मानक विचलन 9.88 है। दोनों समूहों के मध्य अंतर की सार्थकता को जाँचने के लिए शोधकर्ता ने टी-मान की गणना की, जिसका मान 0.31 आया। यह मान डी०एफ० = 98 के लिए 0.05 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 1.98 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर आवश्यक मान 2.63 दोनों से कम है। अर्थात् दोनों समूहों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः यह शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत की जाती है।

शोध निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा बनाई गई परिकल्पनाओं के आधार पर तथा विद्यार्थियों के अंकों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात प्राप्त निष्कर्ष में पाया गया कि-

- छात्रों की तुलना में छात्राओं की इंटरनेट के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.1)।
- छात्राओं की तुलना में छात्रों के सोशल नेटवर्किंग के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.2)।
- छात्राओं की तुलना में छात्रों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.3)।
- ग्रामीण विद्यार्थियों की तुलना में शहरी विद्यार्थियों की अभिवृत्ति इंटरनेट के प्रति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.4)।
- शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की सोशल नेटवर्किंग के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.5)।

- शहरी विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण विद्यार्थियों की इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक है (ग्राफ़ संख्या 1.6)।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ :

इस अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर अभिभावकों, अध्यापकों, विद्यालय और महाविद्यालय के प्रशासकों तथा नीति निर्धारकों को इंटरनेट तथा सोशल नेटवर्किंग साइट्स के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को जानने में सहायता मिलेगी। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण प्रभाव विद्यालय प्रशासकों तथा शिक्षकों के लिए है जिन्हें इंटरनेट एवं सोशल मीडिया उपकरण के शैक्षिक उपयोग पर विचार करने तथा इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से शिक्षण सामग्री के साथ छात्रों तक पहुँचने के लिए विभिन्न रणनीतियों और संभावनाओं का पता लगाने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

Journals-

1. Das, Sanju. & Sikder, Priyanka. (2018). Attitude of University level students towards Social Media. The Research Journal of Social Sciences, Vol. 9, No. 9, pp. 177-180.
2. Muralidharan, Leena. & Gaur, Sangeeta. (2018). A Study on Internet Use by Students and their Academic Achievements in the Present Education System. International Journal of Innovative Research and Advanced Studies (IJIRAS), Vol. 5, Issue 4, April 2018.
3. Sarkar, S. & Das, P. (2015). Impact of Internet and Social Networking Websites on College Students. Pedagogy of Learning, Vol. 3, Issue 2, Pp. 28-37, Oct. 2015.
4. Sharma, Sonal. (2020). Relationship of the Internet and Social Networking sites with the Academic Achievement of School Students. Studies in Indian Place Names (UGC Care Journal). ISSN: 2394-3114. Vol. 40, Issue 74, March 2020.
5. Verma, Pradeep Kumar. & Kumar, Manoj. (2017), सोशल साइट का विद्यार्थियों के बहुमुखी व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। International Journal of Advanced Education and Research, Vol. 2, Issue 5, September 2017, pp. 72-75.

Shodhganga-

6. http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/handle/10603/8851
7. http://hdl.handle.net/10603/287252
8. https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/205706